आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 11/06/2025; Accepted: 19/06/2025; Published: 28/06/2025

बीसवीं सदी में बाल पत्रिकाएं

प्रियंका महावर
शोधार्थी
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
ई–मेल: priyankamahawar827@gmail.com
संपर्क:– 8860208170

प्रियंका महावर, बीसवीं सदी में बाल पत्रिकाएं, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(81-87)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15767752

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध सार

इस लेख में बीसवीं सदी में हिंदी बाल पत्रिकाओं के विकास और उनके बाल साहित्य में योगदान का विश्लेषण किया गया है। यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बाल साहित्य के उद्भव, पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका और उनके साहित्यिक योगदान को प्रस्तुत करता है। विभिन्न पत्रिकाओं के उदय, उनकी विषय-वस्तु, लोकप्रियता, और उनके बंद होने के कारणों की भी चर्चा की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य बाल पत्रिकाओं की भूमिका को समझना और उनका हिंदी बाल साहित्य पर प्रभाव विश्लेषित करना है। बच्चों के बौद्धिक, नैतिक और रचनात्मक विकास में बाल पत्रिकाओं की भूमिका को भी उजागर करता है।

बीज शब्द : बाल साहित्य, बाल पत्रिका, योगदान, विकास, बाल रुचि, मनोरंजन

प्रस्तावना

छोटे बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा जाने वाला साहित्य बाल-साहित्य कहा जाता है। बालक-बालिकाओं की रुचि, मनोरंजन,बौद्धिक एवं मानसिक विकास को केंद्र में रखकर बाल-साहित्य लिखा जाता है। मुख्य रूप से 4 वर्ष की आयु से लेकर 15 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए लिखा जाता है।

बाल साहित्य हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। हिंदी-साहित्य को पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम नहीं है, इसका कारण एक यह भी है कि ये वयस्क पाठक अपने-अपने भूतकाल में कभी अच्छे बाल पाठक भी रहे हैं, अच्छे बाल पाठक भी तभी हुए जब उन्हें एक अच्छा समृद्ध बाल-साहित्य पढ़ने के लिए मिला। हिंदी बाल-साहित्य कुछ 100-150 वर्षों पुराना ही है। हालांकि यह बाल-साहित्य जो अब लिखित रूप में हमारे सामने है वह सालों से मौखिक रूप में दंत कथाओं, लोक कथाओं, दादी-नानी की कहानियों के रूप में मौजूद था।

समय के साथ जब सुव्यवस्थित बाल साहित्य की आवश्यकता हुई तब हिंदी के लेखकों ने बच्चों के लिए परी कथाएँ, उपदेशात्मकता कहानियाँ, शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया। बाल साहित्य सीधा बच्चों के मन से जुड़ा होता है। बाल साहित्य बच्चों के मन का प्रतिबिंब है। जहां एक ओर बाल साहित्य बच्चों में संस्कार पिरोता है वहीं दूसरी ओर उन्हें साहित्य से जोड़ता है। आरंभ में बाल साहित्य केवल बाल मनोरंजन के लिए लिखा गया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि बाल मनोरंजन और बाल विकास दोनों का ही कार्य बाल पत्रिकाओं द्वारा किया गया है। यह भी बिल्कुल सत्य है कि लगभग संपूर्ण बाल साहित्य बाल पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशकों और लेखकों ने बच्चों तक पहुंचाया और उनके बचपन में अनेक कहानियां और कविताएं पिरोई जिन्हें पढ़ कर वे अच्छे पाठक बन गए।

भारत में बाल-साहित्य की शुरुआत विष्णु शर्मा द्वारा लिखित 'पंचतंत्र' से मानी जाती है। इसकी रचना मूल रूप से संस्कृत भाषा में की गई थी। बाद में इसे हिंदी और अनेक भाषाओं में अनुदित किया गया। इसी क्रम में हितोपदेश एवं कथा सरित सागर का भी उल्लेख किया जाता है। 'कथा सरित सागर' के लेखक कश्मीरी पंडित सोमदेव हैं। 'हितोपदेश' के लेखक नारायण पंडित हैं। ये दोनों रचनाएं भी मूलतः संस्कृत भाषा में लिखी गई हैं। ऐसा माना जाता है आधुनिक भारत में बाल-साहित्य सृजन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारंभ हुआ।

हिंदी में बाल–साहित्य सृजन की थोड़ी सी ही ठीक पर पहल राजा शिवप्रसाद सितारे 'हिंद' द्वारा की गई। राजा जी ने पाठ्यक्रम निर्माण के साथ–साथ बालकों के मनोरंजन के लिए आलसियों का कोड़ा, राजा भोज का सपना, बच्चों का ईनाम आदि रचनाएँ लिखी। श्रीधर पाठक द्वारा भी कुछ बालगीत लिखे गए। इसी कड़ी में आचार्य रामलोचन शरण, सोहनलाल द्विवेदी, निरंकार देव सेवक, कामता प्रसाद गुरु, मनहर चौहान, विष्णु प्रभाकर, हरिकृष्ण देवसरे, शांति भटनागर आदि भी शामिल हैं। बाल साहित्य लेखक और आलोचक निरंकार देव सेवक श्रीधर पाठक को हिंदी का पहला 'बालकवि' मानते हैं। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने भी कई बालगीतों का सृजन कर संग्रहित किया।

बाल पत्र पत्रिकाओं की विकास यात्रा

किसी भी भाषा के साहित्य के उद्भव और विकास का श्रेय पत्र–पत्रिकाओं को दिया जाता है। हिंदी भाषा के क्षेत्र में बाल–साहित्य के लोकप्रिय होने का श्रेय तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं को जाता है। यह समय वह था जब हिंदी के अधिकतर बड़े साहित्यकार अन्य विषयों पर ध्यान केंद्रित कर लिख रहे थे और बाल–साहित्य जैसे गंभीर

विषय को नकार रहे थे तब, बाल पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही बाल प्रेमियों द्वारा इन्हें संपादित तथा प्रकाशित किया गया। स्वतंत्र भारत में प्रौढ़ साहित्य का जो स्वरूप विकसित हुआ वैसा, बाल साहित्य को वैसा स्वरूप विकसित करने में कई दशकों का समय लगा।

बाल साहित्य प्रकाशित करने वाली पत्र पत्रिकाओं के भी दो रूप थे। पहली वो जो मुख्य रूप से बड़ों का साहित्य प्रकाशित करती थी, साथ में अंत के कुछ अंकों में कुछ सामग्री बच्चों के लिए भी प्रकाशित कर दी जाती थी। दूसरी प्रकार की वे पत्रिकाएं हैं जो पूर्ण रूप से बच्चों के लिए समर्पित थी। यही वे पत्रिकाएं हैं जिनका विवरण इस लेख में किया गया है।

बाल पत्र–पत्रिकाओं का हिंदी बाल साहित्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है। हिंदी बाल पत्रकारिता का आरंभ भारतेंदु हरिशचंद्र द्वारा संपादित एवं प्रकाशित 'बालदर्पण' से माना जाता है। इसका प्रकाशन सन् 1882 ई में किया गया। यह एक मासिक पत्रिका थी। इस पत्रिका का उद्देश्य बालकों में अच्छे गुणों और भारतीय संस्कारों से परिचित कराना था। जिस समय यह पत्रिका प्रकाशित की गई और बालकों के बीच लोकप्रिय भी हुई इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बाल साहित्य एवं बाल पत्रिकाओं की क्या आवश्यकता रही होगी।

सन् 1891 में 'बाल हितकर' नाम की मासिक पत्रिका लखनऊ से प्रकाशित की गई। सन् 1906 में अलीगढ़ से 'बाल हितैषी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। तभी पंडित किशोरीलाल गोस्वामी के संपादन में 'बाल प्रभाकर' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाने लगा। 1916 तक इसका प्रकाशन होता रहा। मध्य प्रदेश से सन् 1912 में 'मॉनिटर' पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। 1916 में इसका आखिरी अंक प्रकाशित किया गया। इन पत्रिकाओं का प्रकाशन जिस उमंग और उम्मीद के साथ शुरू किया गया था उतनी सफलता इन्हें प्राप्त नहीं हुई, अल्प समय में ही इनका प्रकाशन बंद हो गया।

1910 में रामजीलाल शर्मा ने हिंदी प्रेस प्रयाग से 'विद्यार्थी' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया, इस पत्रिका को अपने समय में बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई। इस पत्रिका को उस समय की कुछ जानी–मानी पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया। सन् 1915 में पंडित सुदर्शन आचार्य ने अपनी पत्नी श्रीमती गोपाल देवी के संपादन में इलाहाबाद से 'शिशु' पत्रिका का प्रकाशन शुरूकिया। इस पत्रिका में छपने वाली अधिकतर बाल कविताएं 'नीति परक' थीं। महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर जैसे बड़े कवियों ने भी इन पत्रिकाओं के माध्यम से बाल साहित्य को समृद्ध किया। यह पत्रिका लगभग 40 वर्षों तक बाल मन पर अपनी छाप छोड़ने में सफल हुई।

विष्णुकांत पाण्डेय का कहना था कि – "बालमन की जिन गहराइयों को पंडित सुदर्शन आचार्य ने समझा था उनको अब तक कोई नहीं समझ सका था।" इसी से इसकी सफलता और लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है।

सन् 1917 में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से पंडित बद्रीनाथ भट्ट ने इंडियन प्रेस इलाहाबाद से 'बाल सखा' पत्रिका का संपादन कार्य शुरू किया। इस पत्रिका की लोकप्रियता उतनी ही थी जितनी लोकप्रियता बड़ों के बीच 'सरस्वती' पत्रिका को प्राप्त थी। 1917 से 1968 तक 'बालसखा' पत्रिका का प्रकाशन होता रहा। इस पत्रिका में मैथिलीशरण गुप्त, कामत प्रसाद गुरु, सुखराम चौबे, गोपाल शरण सिंह, पंडित सोहनलाल द्विवेदी जैसे हिंदी साहित्यकारों की रचना को स्थान मिला। इस पत्रिका को शिखर तक पहुंचाने का श्रेय संपादक पंडित लल्ली प्रसाद पाण्डेय को दिया जाता है।

बाल सखा के प्रथम संपादक पंडित बद्रीनाथ भट्ट ने 'बाल सखा' की विषय वस्तु पर प्रकाश डालते हुए कहा था – "एक बार जड़ पकड़ लेने पर कुसंस्कारों से सहज ही छुटकारा नहीं मिल सकता। अतएव इस बात का प्रयत्न करना की कुसंस्कारों की जड़ ही न जमने पाए, बड़ा भारी परोपकार है क्योंकि इससे जाति या देश का बहुत कुछ कल्याण होना निश्चित है।"

आगे चलकर 1945 में लल्ली प्रसाद पाण्डेय ने 'बाल सखा' के लेखकों को नए विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित किया, नएपन को प्रमुखता देने के लिए प्रेरित किया। वे लिखते हैं – "मैं बाल सखा के कवियों को बताना चाहता हूं कि वे अपना स्वर बदलें। अब सूरज के उगने में, फूलों के खिलने में, कोयल के कूकने में कोई नई बात नहीं रही। ये बातें तो सैंकड़ों वर्षों से लिखी जा रही हैं। आज तो आवश्यकता वह सब लिखने की है जो हमारे सामने नए रूप में आया है और जो भविष्य में नई उपलब्धियों की आशा दे रहा है।"

एक आंकड़े के अनुसार सन् 1940 के आसपास हिंदी में लगभग 30 मुद्रित और 16 हस्तलिखित बाल पत्रिकाएं निकलती थीं । इस आंकड़े से यह समझा जा सकता है कि इस तरह के प्रयास बच्चों में सृजनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। डॉ. श्री प्रसाद के अनुसार – "वह बाल–पत्रिकाओं का स्वर्ण युग था।"

प्रोफेसर उषा यादव का मानना है कि – "स्वतंत्रता पूर्व की बाल पत्रिकाओं में हस्तलिखित पत्रिकाओं की गणना करना जरूरी है। ये पत्रिकाएं काफी संख्या में छापी जाती थीं। यद्यपि इनका प्रसार थोड़े क्षेत्र तक ही रहता था, पर बच्चों को पत्र पत्रिकाओं की ओर आकृष्ट करने में इन हस्तलिखित पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।" इन पत्रिकाओं में स्वयं बालकों द्वारा रचित कहानियां, कविताएं और उनके द्वारा बनाए गए चित्रों को प्रकाशित किया जाता था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन हुआ। सन् 1947 में इलाहाबाद से 'शेर बच्चा' का प्रकाशन हुआ। 1948 में 'लल्ला' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। 1948 में दिल्ली से 'बाल भारती' का प्रकाशन शुरू हुआ। 1946 में लोकप्रिय पत्रिका 'चंदामामा' का प्रकाशन मद्रास से नागिरेड्डी द्वारा किया गया। टाइम्स ऑफ इंडिया ने 'पराग' का 1958 में सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा प्रकाशन प्रारंभ किया। 1964 में हिंदुस्तान टाइम्स ने 'नंदन' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। यह दोनों पत्रिकाएं बच्चों के साथ बड़ों के बीच भी सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय बनी और आज तक इनका नाम उत्तम पत्रिकाओं की श्रेणी में गिना जाता है।

'नंदन' और 'पराग' बड़े बच्चों की रुचि और मनोरंजन के साथ साथ ज्ञानवर्धक सामग्री को प्रकाशित करती रही। 'चंपक' छोटे बच्चों में बहुत लोकप्रिय रही। 'चंपक' पत्रिका की कहानियां जानवरों को मुख्य पात्र के रूप में रखकर बच्चों को नीति नियम की शिक्षा देती रही । 'पराग' पत्रिका ने आधुनिक भाव बोध की कहानियों के माध्यम से किशोरों के मन में वर्षों तक अपना स्थान बनाए रखा। बाल गीत, बाल एकांकियों और उपन्यासों को धारावाहिक रूप में छापना शुरू किया। 'पराग' की विषय वस्तु आधुनिक थी, 'नंदन' की विषय वस्तु परंपरावादी थी। राजा रानी की कहानियां, लोक कथाओं तथा दादी नानी की परंपरागत कहानियों को आधार बनाकर कई वर्षों तक पत्रकारिता जगत में अपना स्थान बनाए रखा । 'पराग' को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विज्ञान फंतासी तथा नवीन विषयों की पत्रिका का स्थान मिला। एक ही समय अवधि में संपादित और प्रकाशित होने के बावजूद दोनों पत्रिकाओं में विषयों की विविधता दिखाई पड़ती है।

'पराग' के भूतपूर्व संपादक श्री आनंद प्रकाश जैन बाल साहित्य को जादूगरी और राक्षसों की कहानियों से दूर रखना चाहते थे। उनका मानना था कि जादूगरी और राक्षसों की कहानियों के लिए बाल साहित्य में कोई जगह नहीं है। वे बच्चों को विज्ञान के नए आविष्कारों से परिचित कराना चाहते थे।

'पराग' के संपादक 'कन्हैयालाल नंदन' जी ने एक साक्षात्कार में कहा था – "बाल पत्रकारिता से जुड़ना अनायास ही था, लेकिन जब जुड़ गया तो मैंने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। बच्चों के लिए तो मैंने एक कहानी भी नहीं लिखी थी और मुझे बच्चों की पत्रकारिता दे दी गई । जुड़ने के बाद मुझे लगा कि इसमें कुछ करना चाहिए। इसमें काम करते हुए मैंने महसूस किया कि बच्चों की पत्रकारिता को काफी सीमित करके देखा गया है। जैसे वे केवल कहानियां या कविताएं ही पढ़ते हैं। बच्चे डायरी नहीं लिख सकते? यात्रा संस्मरण नहीं पढ़ सकते? हिंदी में लिखे जाने वाले नवगीत क्या बच्चों के लिए नहीं लिखे जा सकते? क्या बच्चों के लिए बिम्ब योजना नहीं बनाई जा सकती? इन सवालों पर मैंने सोचा और उन लेखकों को बाल लेखन के लिए उकसाया जो बड़ों के लिए लिखते थे।"

'चंपक' का प्रकाशन 1968 में दिल्ली प्रेस के संस्थापक और संपादन विश्वनाथ जी द्वारा किया गया। यह एक महीने में दो बार प्रकाशित हुआ करती थी। इसके मुख्य खंड थे सुनो कहानी, ज्ञान बढ़ाओ, मजेदार चित्रकथाएं,

मन बहलाओ, जानो–बूझो और गुनगुनाओ आदि। 'चंपक' आज भी प्रकाशित होती है लेकिन उसका स्वरूप अब बदल गया है। इसमें नए स्तंभ शामिल हो गए हैं जैसे चित्र पूरा करें, छिपे चित्र ढूंढें, सामान्य ज्ञान, नन्ही कलम से, स्मार्ट आर्ट आदि।

'चंदामामा' और 'बाल भारती' भी बहुत लोकप्रिय पत्रिकाओं की श्रेणी में रहीं। बाल भारती में वैज्ञानिक तथ्यों से भरपूर लेख प्रकाशित किए जाते रहे तथा चंदामामा की विषय वस्तु मुख्य रूप से राजा–रानी की कहानियां, विक्रम बेताल, संवाद, सामाजिक चेतना पर आधारित कहानियां ज्ञान का खजाना, विज्ञान के तथ्य, दंत कथा और हैरतेंगेज चमत्कार दिखाने वाली कहानियों से भरपूर थी।

पत्रिकाओं के साथ साथ बच्चों के मनोरंजन के लिए साप्ताहिक पत्र भी निकलने लगे। इनमें नन्हें – मुन्नों का अखबार, बच्चों का अखबार और दी चिल्ड्रेन टाइम्स प्रमुख हैं। समाचार पत्रों में भी बच्चों के लिए स्वतंत्र स्तंभ बनाए गए जैसे स्वतंत्र भारत, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, केसरी आदि में पहेलियां, कहानियां, रंगभरो प्रतियोगिता, चुटकुले प्रकाशित होते थे। इनके अलावा 1964 में टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा 'इंद्रजाल कॉमिक्स' का प्रकाशन शुरू किया। 1969 में इंडियन बुक हाउस ट्रस्ट ने 'अमर चित्र कथा' का प्रकाशन प्रारंभ किया।

20वीं सदी में अनेक बाल पत्रिकाओं का बहुत ही कम समय में प्रकाशन बंद हो गया।इनमें सहेली, कमल, गिलहरी, बाल वाटिका, चमकते तारे, आदर्श, मिलिंद, लोटपोट, इत्यादि हैं। इनके बंद होने के कई कारण रहे हैं लेकिन वित्तीय कारण उनमें प्रमुख था बाल पत्रिकाओं के प्रकाशकों और लेखकों ने स्वयं ही बालकों के लिए मनोरंजक और ज्ञानवर्धक साहित्य सृजन का बीड़ा उठाया था इस उम्मीद से की समय के साथ पत्रिकाओं को लोकप्रियता के साथ साथ वित्तीय स्थिरता भी मिल जाएगी लेकिन कई पत्रिकाओं के साथ ऐसा संभव नहीं हो सका। 20वीं सदी में यह जोखिमभरा काम करना अपने आप में एक साहसपूर्ण निर्णय था।

निष्कर्ष:

बीसवीं सदी में बाल पत्रिकाओं ने बाल-साहित्य को एक नई दिशा दी और बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके बौद्धिक और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पत्रिकाओं ने न केवल बालकों को ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान कर सृजनात्मक क्षमता को भी विकसित किया। 'बाल सखा', 'पराग', 'नंदन' और 'चंपक' जैसी पत्रिकाओं ने बच्चों के मनोभावों को समझते हुए उनके लिए रोचक कहानियां, कविताएं और चित्र कथाएं प्रकाशित कीं। इन पत्रिकाओं ने बच्चों को साहित्य के प्रति आकर्षित किया और उनके व्यक्तित्व निर्माण में योगदान दिया। हालांकि, समय के साथ कई बाल पत्रिकाएं वित्तीय कठिनाइयों और बदलती प्राथमिकताओं के कारण बंद हो गईं, लेकिन उनका प्रभाव आज भी बच्चों के साहित्यिक विकास में दिखाई देता है। इन पत्रिकाओं ने न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में कार्य किया, बल्कि बच्चों को सामाजिक मूल्यों, विज्ञान और संस्कृति से

भी परिचित कराया। बाल पत्रिकाओं ने बच्चों के साहित्यिक भविष्य को आकार देने में एक अहम भूमिका निभाई और हिंदी बाल-साहित्य के समृद्ध इतिहास में अपना अमिट स्थान बनाया।

संदर्भ सूची :

1. बाल साहित्य परंपरा, प्रगति और प्रयोग – सुरेंद्र विक्रम
2. भारतीय साहित्य के विविध आयाम (हिंदी बाल साहित्य के विकास में बाल पत्रिकाओं का योगदान) – सुरेंद्र विक्रम
3. हिंदी बाल साहित्य परम्परा विकास एवं मूल्यांकन (शोध प्रबंध, अध्याय–6)– सुरेंद्र नाथ तिवारी 1992
4. आधुनिक हिंदी में बाल साहित्य का विकास, डॉ. विजय लक्ष्मी सिन्हा, साहित्यवाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
5. https://www.apnimaati.com/2024/12/blog-post_70.html?m=1
6. https://hindibaalsahitya.blogspot.com/2015/02/blog-post.html?m=1
7. https://hindibaalsahitya.blogspot.com/2017/07/blog-post_11.html?m=1
8. https://hindibaalsahitya.blogspot.com/2022/09/blog-post.html?m=1
9. https://archive.org/details/nandan-may-92/page/n23/mode/1up

****